हो जाता है जिससे चारों तरफ अवसाद फैल जाता है।

(5) पुनरुद्धार — अवसाद काल जैसे जैसे बढ़ता है, बैंकों के पास नकद कोष बढ़ता जाता है क्योंकि इस काल में व्यापारी अपने निक्षेपों को अधिकाधिक मात्रा में ऋण वापस करने में लगा जाते हैं। अतः एक ऐसी स्थिति आ जाती है जब बैंकों के पास इच्छित मात्रा से अधिक नकदी हो जाती है। फलतः बैंक पुनः साख निर्माण का काम करके तेजी की भांति साख का विस्तार करने लगते हैं और फिर धीरे धीरे आर्थिक धन्धा जोर पकड़ने लगता है और पुनरुत्थान आरम्भ हो जाता है। इस तरह उतार-चढ़ाव का एक चक्र पूरा हो जाता है और विस्तार की संचयी प्रवृत्ति पुनः नये सिरे से प्रारम्भ हो जाती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हाट्रे के अनुसार मुख्यतः बैंक साख की अस्थिरता ही व्यापार चक्र के लिए उत्तरदायी है। अगर इस अस्थिरता को समाप्त कर दिया जाय तो व्यापार-चक्र स्वयं भी समाप्त हो जायगा।

Scanned with CamScanner

हाट्रे के सिद्धान्त की आलोचना — हाट्रे के शुद्ध मौद्रिक सिद्धान्त की बहुत सारी आलोचना भी की गई है जो निम्न हैं।

(1) अवास्तविक — सांख्यिकी अध्ययन इस मत की पुष्टि नहीं करते है कि ब्याज की नीची दर व्यापारियों को अधिक स्टाक बनाने की दिशा को प्रोत्साहित करती है स्टाक तो इस देखकर बनाये जाते हैं कि इसकी लाभपूर्ण कीमतों पर बेचने की सम्भावना कितनी है यदि व्यापारियों को यह विश्वास हो जाय कि भविष्य में वस्तुओं की मूल्य अधिक ऊँचा हो जायगा तो वे स्टाक में वृद्धि कर देंगे चाहे ही ब्याज की दर ऊँची हो इसके विपरीत अगर भविष्य में मूल्यों के गिरने की आशा रहती है तो नीची ब्याज की दर पर भी व्यापारी स्टाक अधिक नहीं रखते हैं।

(2) ब्याज दर में वृद्धि — हाट्रे के सिद्धान्त के अनुसार तेजी से शिखर पर ब्याज कीदर में वृद्धि ही स्थिति को नया मोड़ देती है और संकट को आरम्भ करती है परन्तु सामान्य अनुभव यह बताता है कि ब्याज की दर में वृद्धि संकट के पश्चात आती है न कि संकट से पहले। इसका कारण यह है कि संकट साख का पतन कर देता है। अवसाद काल में व्यक्ति की तरलता पसन्दगी बढ़ जाती है जिसके कारण ब्याज की दर बढ़ जाती है।

(3) पूंजीगत वस्तुओं का उत्पादन — इस सिद्धान्त से यह ज्ञात नहीं होता है कि उपभोग वस्तुओं की तुलना में पूंजीगत वस्तुओं के उत्पादन में अत्यधिक घट बढ़ क्यों होती है।

(4) साख मुद्रा नीति — हाट्रे के मतानुसार यदि बैंक अपनी साख मुद्रा नीति का इस प्रकार निर्माण करें कि अर्थ व्यवस्था में विनिमय माध्यम की पूर्ति स्थिर रहे तो व्यापार चक्र की घटना का अन्त हो सकता है। पहले तो विनिमय माध्यम को स्थिर रखना कठिन है, यदि किसी प्रकार सम्भव भी हो तो केवल ऐसा करने से व्यापार चक्र की घटना का समापन नहीं हो सकता है।

(5) बैंक साख भी व्यापार चक्रों का कारण नहीं — यह कहना गलत है कि केवल बैंक साख में विस्तार मन्दी दूर करने का उपाय है कारण यह है कि 1930 की महान मंदी में मुद्रा की बढ़ती हुई पूर्ति मन्दी को समाप्त करने में असफल रही। इसी प्रकार यह कहना भी बहुत कठिन है कि केवल बैंक साख में संकुचन मन्दी को उत्पन्न करेगी। व्यापारी ऊँची ब्याज की दर पर भी मुद्रा उधार ले सकते है यदि वे पूंजी पर प्रत्याशित लाभ की दर को ऊँचा समझते है। वास्तव में बैंक साख व्यापार चक्रों को शुरू करने का कारण नहीं है यह तो केवल विस्तार या संकुचन को बढ़ा देती है

Scanned with CamScanner

इन सारी आलोचनाओं के अतिरिक्त भी हाट्रे के सिद्धान्त की कुछ अन्य आलोचनाएं भी है जो निम्न प्रकार है।

हाट्रे ने अमौद्रिक कारणों की सर्वथा उपेक्षा की है, जबकि वास्तविकता यह है कि अमौद्रिक कारण भी व्यापार चक्र को घटना उत्पन्न कर सकते है।

हैमबर्ग का यह मत है कि हाट्रे ने अपने सिद्धान्त में थोक व्यापारियों के महत्व को अनावश्यक रूप से बहुत बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया है।

प्रो० हैरोड ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा है कि यह सिद्धान्त व्यापार चक्र को जन्म देने वाले मूल कारणों की व्याख्या ही नहीं करता।

उपर्युक्त आलोचनाओं और कमजोरियों को होने के बाद भी हाट्रे की यह देन है कि उन्होंने विस्तार या संकुचन की संचयी प्रक्रिया में बैंक साख के महत्व पर हमारा ध्यान केन्द्रित किया।

Scanned with CamScanner